दोहा / ताटंक / वीर - आयो^{2} रे हमारो बडो भाग्य
पावन हो गई
शुद्धात्मा का श्रद्धान
प्रभु जी अब न भटकेंगे
रोम रोम से
मीठे रस से भरी
(अंतर में आनँद आयो जिनवर दर्शन पायो
अँर्तमुख जिन मुद्रा लखकर आतमदर्शन पायो जी पायो)
आओ रे आओ रे ज्ञानानँद की डगरिया
नाम तुम्हारा तारणहार
सिद्धो की श्रेणी
हेगुरुवर धन्य हो तुम, तुम अपने मे रहते हो

वीर / दोहा / ताटंक / चौपाई - जन^{2} को अचरज आयो
रोम रोम पुलकित
रँग मा^{2} (जनम जरा बूजन मे नाश लियो रे)
जिनवाणी अमृत रसाल
जैनधर्म के हीरे मोती
म्हारा परम दिगम्बर
प्रभुवर तुम हो चंदा और मैं हूँ चकोर

रोला / चन्द्रायण / आडिल्ल / — हे प्रभु चरणों में तेरे
पीयूषनिर्जर / पीयूष राशि — छोड़ो पर की बातें
— आत्मा हूँ

ताटंक / वीर / जोगीरासा — जिनवाणी जग मैय्या जनम दुख मेट दो
कुन्दकुन्द से पुत्र तुम्हारे, गणधर जैसे भैय्या।
समवशरण सा महल तुम्हारा तीर्थंकर से सैय्या

विधाता — तुम्हारे दर्श बिन स्वामी

मत्तसवैया / पादरि — मैं उस का अनुगामी हूँ, जिस पर चल कर प्रभु सिद्ध हुए
रघुपति राघव राजा राम
काग के भाग बड़े सजनी हरी हाथ सो ले गयो

मनहरण — मंगल महोत्सव आ गया देख 3 जी आनंद छा गया
बड़ा पुण्य अवसर यह आया दशलक्षण विधान रचाए
पूजा रचाया थाल सजाया, प्रभु के सन्मुख अर्घ चढ़ाए
मोक्ष का मार्ग हमें भा गया, देखो 3

ताटंक / पद्धरिका / मत्तसवैया — भव वन में जी भर घूम चुका

विजया — ऐसी लागी लगन
अगर हम वीर वाणी

राधिका — हे सीमंधर भगवान

मानव - आत्मा ही समयसार म्हाने जिनवाणी सिखलइयो
तू जाग रे चेतन प्राणी
ऐसा धर्म है मेरा
मेरे सामने वाली खिड़की में
तुझे बेटा कहू की वीरा

हरिगीतिका / गीता / गीतिका - गुरुओ के उपकार को
- गाथा (मैं देव श्री)
- समयसार (मुक्ति गये न
- साधना के रास्ते
- निग्रन्थों का मार्ग
- जिस देश में
- सिद्धो की श्रेणी
- वीतरागी देव

अवतार - माता तू दया करके
बाजे कुण्डलपुर में बधाई
नंदीश्वर श्री जिन धाम

मणुयानंद - नीर गंध अक्षतान् पुष्प

रोला - मनहर तेरी मूरतिया, आत्मा हु आत्मा, हे प्रभु चरणों
(कुण्डलिया / चंद्रायण) जिनवाणी^{2} ध्याना सभी, मीठे^{2} बोल

विधाता - दौड़े २ मुश्किल है
- तुम्हारे दर्श बिन स्वामी
- तिहारे ध्यान की
- परम उपकारी
- तुझे जिन धर्म पर चलना, सिखाती है रोज जिनवाणी।

दिग्वधु / दिग्पाल - अशरीरि सिद्ध भगवान
- इन्साफ की डगर पे

सोरठा - निर्ग्रन्थो का मार्ग
- लिया प्रभु अवतार

पंचामर - नशे घातिया कर्म
- मैं पूर्ण ज्ञायक
- वन्दे जिनवरम्
-

राधिका - हे सीमंधर भगवान

चौपाई - रोम रोम पुलकित
- शांति सुधा बरसाये
- सुनो जी
- अपना ही रँग
- होली खिले
- वीरा प्रभु के ये बोल
- आओ रे आओ रे
- रँग मा
- मेरी मिट्टी

नारायण - वन्दे जिनवरम् - 2 (Slow)

नाराच / पंचचामर - वन्दे जिनवरम्

वीर - दिन आयो 2, आनंत अंतर मां, आओ तुम्हे ध्रुवधाम दिखाऊं
घर 2 आनँद छायो, जिनवर दरबार
ॐ कार मयी, शुद्धात्मा, क्या तन माजना
पावन हो गई, आओ रे ज्ञानानंद, मङ्गल बेला
भावना की चूनर, प्रभुजी अव न
तुम ज्ञायक चेतन, ऐसा धर्म है मेरा
ये धर्म हमारा है, ये धर्म हमारा है
रंग मा, आयो रे हमारो लड़ो
जिनमँदिर में आओ म्हारा साथी, निग्रन्थों का मार्ग
बह रही रे धरम की धार, हे गुरुवर धन्य हो तुम
सिद्धो से मिलने का, आओ तुम्हे ध्रुवधाम
निरखी 2 मनहर मूरत, श्री अरहंत सदा मंगलमय
नाम तुम्हारा तारणहारा, कैसी सुन्दर जिनप्रतिमा है
जयउ जिनवर, तीन भुवन के स्वामी, जन जन के अघरज
माँ जिनवाणी, शांति सुधा बरसाये, मुझे है स्वामी उस बल की दरकार
कैसे करु गुणगान प्रभुजी